

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:07-03-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)क

पाठ अष्टम पाठनाम विचित्र साक्षी

### पाठ्यांश

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम् । तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ । आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत् ,अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः।भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करं आसीत् ।स भारवेदनया क्रन्दति स्म।तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच -रे दुष्ट! तस्मिन् दिने तयाऽहं चोरतायाःमञ्जूषायाः ग्रहणाद् वारितः ।इदानीं निजकृतस्यफलंभुङ्क्व।अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चित् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ ।

### शब्दार्थाः-

प्राप्य – प्राप्त करके , प्राचलताम् – चल पड़े , काष्ठपटले – लकड़ी के तख्ते पर, निहितं – रखे हुए को , मुदितः -प्रसन्नः पटाच्छादितम् – कपड़े से ढंके हुए को , वहन्तौ – (दोनों) ले जाते हुए को , भारवतः-भारी प्रस्थितौ - (दोनों) चल पड़े , सुपुष्टदेहः - स्वस्थ व मोटे शरीर वाला , कृशकायः - दुबले -पतले शरीर वाला दुष्करम् -कठिन , निशम्य – सुनकर , चोरितायाः - चुराई गई , वारितः - रोका गया था , वर्षत्रयस्य – तीन वर्ष की , यथाकथञ्चिद् - जैसे-तैसे , चत्वरे – चौराहे पर

### अर्थ

आज्ञा को पाकर दोनों चल पड़े ।वहां पहुंचकर लकड़ी के तख्ते पर रखे कपड़े से ढंके शरीर कंधे पर उठाए हुए न्यायालय की ओर चल पड़े। सिपाही मोटे और शक्तिशाली शरीर वाला थाऔर कैदी बहुत पतले शरीर वाला भारी शव को कंधे से उठाना उसके लिए बहुत कठिन था।वह बोझ उठाने के कष्ट से रो रहा था।उसका रोना सुनकर प्रसन्न सिपाही बोला –“अरे दुष्ट !उस दिन तूने मुझे चोरी की गई पेटी को लेने से रोका था। अब अपने किए फल भोग ।इस चोरी के अभियोग में तू तीन साल की जेल का दंड पाएगा ।“ ऐसा कहकर जोर से हंसने लगा ।जैसे तैसे दोनों ने लाश को लाकर एक चौराहे पर रख दिया।